गुरुकृपायोगकी महिमा

अन्य योगमार्गोंकी तुलनामें गुरुकृपायोग श्रेष्ठ !

अनुक्रमणिका

[कुछ वैशिष्ठ्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिन्हसे दर्शाए गए हैं ।]

१. गुरुकृपायोग **१६**

१ अ. एवं १ आ. अर्थ, उत्पत्ति एवंस्थिति १६

१ इ. महत्त्व **१६**

* गुरुकृपायोगसेअहंका शीघ्र न्यून होना १७

* आध्यात्मिक स्तरकेअनुसार योगमार्गमें होनेवाले परिवर्तन एवं गुरुकृपायोगका महत्त्व १७

* गुरुकृपायोगमेंअन्य योगोंका समावेश १८

* सगुणसे निर्गुणकी ओर जाना २०

* समष्टि साधना * उन्नति २२

* अन्य लोकोंके संदर्भमें महत्त्व २६

* मुक्ति तथा मोक्षकी प्राप्ति २७

* दुर्गादेवीकी उपासना निर्गुणपर आधारित है, इसलिए इस उपासनासेस्तर बढनेमें अधिक समय लगना २८

* गुरुकृपायोगानुसार साधना करनेवाले जीवका बुद्धिलय कर्म, ज्ञान व वैश्विक बुद्धि, ३ स्तरोंपर होना तथा गुरुकृपायोग अनुसार 'गुरुपद' पानेवालेजीवका 'वैश्विक गुरु' होना २९

१ ई. गुरुकृपायोगानुसार साधनाकी विशेषताएं ३०

* विवाह करनेकी आवश्यकता न होना ३०

* प्रतिभा शीघ्र जागृत होना अर्थात उचित एवं अनुचितके संबंध में ईश्वरीय मार्गदर्शन प्राप्त होना ३०

* 'गुरुकृपायोग निरपेक्ष भावपर आधारित योग है।' ३१

* गुरुकृपायोग, व्यष्टि व समष्टि साधना का आदर्श संगम है, इसलिए स्थूल व सूक्ष्म स्तरोंपर कार्यहोकर साधकोंके लिए अल्पावधिमें निवृत्ति साध्य कर पाना संभव ३१

* सप्तदेवताओंकी सूक्ष्म-स्तरीय उपस्थिति तथा कार्य ३६

* युगोंके संदर्भमें विशेषताएं ४०

१ उ. गुरुकृपा किस प्रकार कार्यकरती है? ४४

२. गुरुकृपायोग एवं अन्य योगमार्गोंकी तुलना ५०

२ अ. गुरुकृपायोग अर्थात 'विहंगम योग' एवंअन्य योग अर्थात 'भासमान योग' तथा उनकेकारण 'वियोग' होना ५०

२ आ. विशिष्ट योगमार्ग एवं गुरुकृपायोग ५१

२ इ. आध्यात्मिक स्तरानुरूप विविध योगमार्गानुसार साधना ५९

२ ई. उन्नतिकेलक्षण ६३

२ ई १. साधनाकेविविध प्रकारोंसेविविध देहोंकी शुद्धि ६३

२ ई २. आरंभसेही गुरुके मार्गदर्शनमें परोक्षरूपसे साधना करनेसे उसकेसभी देहोंकी शुद्धि एवंगुरुकी प्राप्ति शीघ्र होना ६६

२ ई ३. सूक्ष्म माध्यमसे उत्तर पाने के लिए ध्यानमार्गकी तुलनामें भक्तिमार्गव भक्तिमार्गकी तुलनामेंगुरुकृपायोग श्रेष्ठ ६६

२ ई ४. गुरुकृपायोगकी तुलनामें अन्य सर्वयोगमार्गोंमें ओजनिर्मिति विलंबसे होना ६७

२ उ. आध्यात्मिक उन्नति (अन्य मार्गोंकी तुलनामेंशीघ्र) ६८

२ ऊ. गुरुद्वारा बताई साधना तथा अपने मनसे की गई विभिन्न योगमार्गोंकी साधनाके प्रगतिके चरणोंका स्थूल अध्ययन ६९

२ ए. ‘गुरुकृपायोगसे जीव स्वावलंबी बनता है। ७४

२ ऐ. ईश्वरीय कृपा ७४

२ ऐ १. देवताओंकी कृपा अधिक होना ७४

२ ऐ २. ईश्वरकी कृपा एवं प्राप्ति भी शीघ्र होना ७४

३. अनिष्ट शक्तियोंसे होनेवाले कष्ट एवं गुरुकृपायोग ७४

* मांत्रिकोंसेकष्ट होनेपर भी, साधकोंद्वारा गुरुकृपायोगानुसार समष्टि कार्यजारी रखनेसे क्रुद्ध मांत्रिकोंद्वारा कष्ट पहुंचाना ७४

* साधकको अनिष्ट शक्तिद्वारा गुरुरूप अथवा उपास्यदेवताका रूप लेकर अधिक कालतक भ्रमित न कर पाना ७५

* स्वभावदोष अल्प करनेसे मनोलय एवं बुद्धिलय होकर
अनिष्ट शक्तियोंसे लडकर समाजमें धर्मकार्यकर पाना ७६

* ईश्वरको प्रिय सत्त्वगुण ऊर्जास्वरूप होनेके कारण उसकेद्वारा
रज-तम गुणी असुरी शक्तियोंको पराजित करना संभव तथा
गुरुकृपायोगसे यह साध्य होना ७७

४. ईश्वरीय राज्यकी स्थापना एवं गुरुकृपायोग ७८

४ अ. 'गुरुकृपायोगके अनुसार साधना करतेसमय हानि सहनेवाला
तथा क्षात्रतेज एवं ब्राह्मतेज युक्त साधक, मोक्षप्राप्तिका
अधिकारी होना व उसका ईश्वरीय राज्य निर्मित कर पाना ७८

४ आ. गुरुकृपायोगमें ईश्वरीय राज्य के लिए साधना, समष्टि साधना
एवं व्यष्टि साधनाके त्रिवेणी संगमके योगसे साधकोंकी
उन्नति शीघ्र होना एवंईश्वरीय राज्यकी स्थापना संभव ७९

४ इ. गुरुकृपायोगानुसार साधना करनेसे ईश्वरीय राज्य
स्थापित होनेकी प्रक्रिया ८०

भूमिका

ईश्वरप्राप्तिकेलिए कर्मयोग, भक्तियोग, ध्यानयोग, ज्ञानयोग आदि विविध योगमार्ग (साधनामार्ग) हैं। इनमें एक है‘गुरुकृपायोग’, जिसमें सभी योगमार्गोंका समावेश है। इसीलिए, गुरुकृपायोगानुसार साधना करनेवाले साधकको किसी विशेष साधनामार्गका आश्रय नहीं लेना पडता, उसकी आध्यात्मिक उन्नति सहज, सर्वांगीण और दूसरेयोगमार्गोंकी तुलनामें शीघ्र होती है। इसलिए, ‘गुरुकृपायोग’कोईश्वरप्राप्तिका सर्वश्रेष्ठ ‘सहजयोग’ भी कहा गया है।

केवल अपनेबलपर साधना कर ईश्वरकोप्राप्त करना, अति कठिन होता है। इसकी अपेक्षा अध्यात्मकेकिसी अधिकारी व्यक्ति अर्थात गुरु अथवा संत केमार्गदर्शनमेंसाधना करनेसेईश्वरप्राप्तिका ध्येय शीघ्र साध्य होता है। यही गुरुकृपाकी विशेषता है। गुरु, शिष्यका अज्ञान दूर कर अहंकार घटाते हैं। इसलिए, उनकी बताई हुई साधना करनेसे आध्यात्मिक उन्नति शीघ्र होती है।

गुरुकृपायोगका महत्त्व क्या है, गुरुकृपायोगानुसार साधना करनेसे अन्य सांप्रदायिक साधना एव ंयोगमार्गोंकी तुलनामें अल्पावधिमें आध्यात्मिक उन्नति क्यों और कैसे होती है, गुरुकृपायोग में मृत्युके पहले और पश्चात भी साधक जीवपर गुरुकृपा कैसेबनी रहती है? ऐसे विविध विषयोंका मार्गदर्शक यह ग्रंथ आपकोएक नए ज्ञान विश्वमें ले जाता है।

इस ग्रंथमेंसमाविष्ट ज्ञान सनातनकेसाधकोंकोप्राप्त हुए हैं, जो साधारण व्यक्तिको समझनेमें कुछ कठिन है। परंतु, जो साधना करता है, उसे यह ज्ञान कठिन नहीं लगेगा । जिसमें जिज्ञासा और लगन है, ऐसे प्राथमिक अवस्थाके साधकको भी इस ज्ञानका आंकलन होसकता है।

प्रत्येक व्यक्ति इस ग्रंथमेंप्रकाशित ज्ञानका उपयोग कर अपनी साधना बढाए और माध्यमसे ईश्वरप्राप्ति करे, यह श्री गुरुसेप्रार्थना ! – **संकलनकर्ता**